

विनायक चतुर्थी

13 दिसम्बर



अपने जीवन से यदि दुःख, दारिद्र्य, कठिनाईयों को समाप्त करना है, तो
इसका एक ही उपाय है-

हेरम्ब गणपति साधना

‘कलौ चण्डी विनायकौ’ अर्थात् कलियुग में चण्डी एवं गणपति की साधना शीघ्र एवं पूर्ण फलदायक है, ऐसा विद्वानों का मानना है, ऐसा उनका चिन्तन है।

चाहे कुछ भी हो, यह तो अकाट्य सत्य है, कि प्रत्येक पूजन कार्य में, प्रत्येक धार्मिक अनुष्ठान अथवा क्रिया में सर्वप्रथम गणपति की ही पूजा की जाती है... सर्वप्रथम उन्हीं की अर्चना की जाती है।

गणेश को पार्वती ने अपने शरीर में लगे उबटन से निर्मित किया था, जो कि वास्तव में पृथ्वी तत्त्व है। यही कारण है, कि कुण्डलिनी योग में गणेश को प्रथम चक्र (मूलाधार, जो पृथ्वी तत्त्व से संबंधित है) का अधिष्ठाता माना गया है।

और चूंकि प्रथम चक्र एवं मूल के स्वामी गणेश ही हैं, अतः अब यह रहस्य नहीं रहा, कि इनकी पूजा सर्वप्रथम क्यों होती है।

गणेश का अर्थ होता है-गण+ईश, अर्थात् जो गणों के स्वामी है, परन्तु आम व्यक्ति गणों से तात्पर्य लगाता है शिव के भूत-प्रेतों से, जबकि वास्तव में यहां गण का अर्थ है इन्द्रियां और इन्द्रियों के स्वामी होने के कारण ही हमने इन्हें गणेश कहा है।

यह सही ही है, इन्द्रियों से जो हमें अधिकतर अनुभूतियां होती हैं, ये स्थूल शरीरगत होती हैं और स्थूल शरीर का अर्थ ही पृथ्वी तत्त्व है। अतः स्थूल शरीर से ऊपर उठने के लिये गणेश की साधना आवश्यक है, क्योंकि वे विघ्नहर्ता हैं और अगर प्रसन्न हो जायें, तो व्यक्ति के रास्ते के सभी विघ्न समाप्त कर उसके जीवन को उर्ध्वमुखी बनाने में सहायक होते हैं।

अतः **गणेश साधना** में **पवित्र मन** से **तत्पर** होना चाहिये और **सभी नियमों** का पालन करना चाहिये। **गणेश** के **तांत्रिक क्षेत्र** में कई स्वरूप **प्रचलित** हैं और मूल रूप में ये **तांत्रिक देवता** ही हैं, जिसका अर्थ है-**पूर्ण जाग्रत, चैतन्य** एवं **शीघ्रातिशीघ्र फल** देने वाले। **गजानन, धूम्रकेतु, गणाध्यक्ष** आदि इनके कुछ नाम हैं और इन्हीं में से एक नाम है **‘हेरम्ब गणपति’**।

हेरम्ब गणपति

प्राचीन काल में ही **हेरम्ब गणपति की साधना** का **प्रचलन** रहा है और सभी ने इस बात को एक मत होकर **स्वीकारा** है, कि चाहे कैसी ही **परेशानी** क्यों न हो, चाहे किसी भी प्रकार का **विघ्न** क्यों न **उपस्थिति** हो जाय, इस **साधना** को सम्पन्न करते ही सभी प्रकार की **चिन्ताएं** जड़ समेत **नष्ट** हो जाती हैं।

आजकल के परिवेश में **सामान्यतः** जो लोगों की **परेशानियां** हैं, वे हैं-**दारिद्र्य, रोग, पीड़ा, शत्रु भय, मुकदमा, असफलता** आदि। अगर किसी प्रकार से इन सब में **सफलता** प्राप्त हो सकती है, तो वह मात्र **हेरम्ब गणपति साधना** ही है, क्योंकि यह **साधना स्त्री, पुरुष, बालक, वृद्ध** कोई भी सम्पन्न कर सकता है, साथ ही इसके लिये कोई **सम्प्रदाय** आदि का **विचार** भी नहीं, इस **साधना** को **सुगमता** पूर्वक कोई भी सम्पन्न कर सकता है। यह साधना **अत्यधिक सरल** है और शीघ्र फल देने वाली है। अतः प्रयास कर के **व्यक्ति** को इस **साधना** को सम्पन्न करना ही चाहिये।

अब नीचे इस **साधना** से **संबंधित** कुछ तथ्य स्पष्ट किये जा रहे हैं, जो **साधना** करते ही व्यक्ति के जीवन में स्पष्ट हो जाते हैं-

1. **साधक** का **कारोबार** दिनों दिन बढ़ता ही रहता है और उसके घर में **धन का आगमन** होता ही रहता है, इस प्रकार उसकी **दरिद्रता** समाप्त होती है।
2. अगर व्यक्ति **नौकरीपेशा** हो, तो उसकी **पदोन्नति** होती है और वह **अधिकारियों** का **प्रियपात्र** बनता है।
3. किसी भी प्रकार का **रोग**, चाहे कितना ही **गम्भीर** और **पुराना** क्यों न हो, **नष्ट** हो जाता है और व्यक्ति **स्वस्थ, सुन्दर** एवं **दीर्घजीवन** व्यतीत करने में **सफल** होता है।
4. उसके समस्त **शत्रु परास्त** होते हैं, **मुकदमें** आदि में उसकी **विजय** होती है और उसके **विपक्षी** उसके पैरों में गिरते हैं।
5. उसका **पारिवारिक जीवन** **आनन्दप्रद** होता है और **मनचाहा जीवन साथी** मिलता है।

6. **धन, वैभव, मकान, वाहन** सहज ही **उपलब्ध** हो जाते हैं।
7. **समाज** में उसे **मान, सम्मान, पद, प्रतिष्ठा, धन, वैभव** एवं **ख्याति** सभी **उपलब्ध** होते हैं, उसके **जीवन** में उसकी **सफलता** के रास्ते में जितने भी **विघ्न** उपस्थित होते हैं, वे स्वतः ही समाप्त होते रहते हैं और वह सदैव **ऊंचाइयों** की ओर **अग्रसर** होता रहता है।
8. इस **साधना** से व्यक्ति का **मूलाधार चैतन्य** हो जाता है। इस प्रकार व्यक्ति **भौतिक सुख-सुविधाओं** के साथ-साथ **आध्यात्मिक ऊंचाइयों** की ओर भी **अग्रसर** रहता है।

ऊपर बताई गई स्थितियां **साधना** सम्पन्न करने के बाद **साधक** के जीवन में स्वतः ही **उत्पन्न** हो जाती हैं और जब इनका **प्रादुर्भाव** उसके जीवन में होता है, तब वह **पूर्ण आनन्द** के साथ, बिना किसी भी **चिन्ता** या **मानसिक तनाव** के **श्रेष्ठता** के पथ पर **अग्रसर** होने लगता है।

साधना विधान

यह एक **तांत्रिक साधना** है, **तीक्ष्ण** और **शीघ्र फलदायी** है। यह **एक दिवसीय साधना** है और इसे **रात्रि** में ही सम्पन्न करना चाहिये। साधक **दिनांक 13 दिसम्बर** या किसी भी **बुधवार** की रात्रि को **पीली धोती** धारण कर **पीले आसन** पर **पश्चिमाभिमुख** होकर बैठें और अपने समक्ष **पीले वस्त्र** से ढके बाजोट पर **‘हेरम्ब गणपति यंत्र’** स्थापित कर उसका **विधिपूर्वक पूजन** सम्पन्न करें। फिर **‘पीली हकीकमाला’** से निम्न **मंत्र** का **75 माला** मंत्र जप करें-

मंत्र

॥ ॐ गं गणपतये गं नमः ॥

Om Gam Ganpataye Gam Namah

साधना वाले दिन किसी से **अनावश्यक** बात न करें, एक समय **भोजन** करें जिसमें **बेसन** से बनी वस्तु अवश्य हो एवं **ब्रह्मचर्य** का पालन करें। **साधना** समाप्त होने के पश्चात् किसी **जलाशय** या **नदी** में **यंत्र** तथा **माला** को **विसर्जित** कर दें।

ऐसा करने से **साधना फलीभूत** होती है और **साधक** की समस्त **मनोकामनाएं** पूर्ण होती हैं, उसके समस्त **विघ्न** दूर होते हैं और वह जीवन के **प्रत्येक क्षेत्र** में **सफलता** प्राप्त करता है।

शीघ्र फलप्रदायक हेरम्बगणपति दीक्षा न्यौ. ₹1800

साधना सामग्री न्यौछावर ₹650